डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 जनवरी 2010 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - सातवां | अंक-नौवां | जनवरी-2010 | मासिक पत्रिका

5
नए साल की शुभकामनाएं
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को नए साल की शुभकामनाएं
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

7
गुरु का आगमन
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से
(पौटर वेली, केलीफोर्निया)

11
करामात
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज 16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

31
प्रेम-विरह
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन - 9950 55 66 71 (राजस्थान) व 9871 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-09928 92 53 04, 09667 23 33 04

उप सम्पादिका : नंदिनी **सहयोग :** रेनू सचदेवा, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम

16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

94

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा नए साल का संदेश

नए साल की शुभकामनाएं

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

आप सबको नए साल की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। हर इंसान की जिंदगी में नया साल एक नई शुरूआत होती है। हमने इस साल में यह लेखा-जोखा लगाना है कि हमने कितना भजन-सिमरन किया है?

संसार में हर महात्मा ने अपने सेवकों को कोई न कोई तरीका बताया है। गुरु नानकदेव जी, गुरु रामदास जी, गुरु गोविंद सिंह जी ने भी अपने सेवकों को जीवन की पड़ताल के बारे में बताया। गुरु साहिबानों के समय में कई बार सेवक संगत में खड़े होकर बताया करते थे कि मैंने कितनी तरक्की की है और कितने ऐब किए हैं।

गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने सेवकों से कहा, ''जब आपसे पाप हो जाता है तब आप एक कंकड़ एक तरफ रख दें फिर गिनें कि आपसे कितने पाप हो गए हैं; जब हम गिनेंगे तो हमें शर्म महसूस होगी।''

करतूत पशु की मानस जात लोक बेचारा करे दिन-रात।

हम बाहर से अपने आपको इंसान कहलवाते हैं और देखने में भी इंसान लगते हैं अगर हमारी करतूतें ऐसी हैं तो हमें अपने आप पर शर्म जरूर आएगी। परमात्मा कृपाल ने हमें डायरी रखने के लिए दी जिसे आप रोजनामचा, डायरी या जीवन की पड़ताल कह सकते हैं।

हमारे हिन्दुस्तान में पढ़े-लिखे लोग कम है जबकि अब तो पढ़ाई का बहुत प्रसार है। हमने देखा है कि महाराज जी ने 'नामदान' के वक्त कई बूढ़ियों को डायरियां दीं लेकिन उन्होंने उन डायरियों को घर ले जाकर ऊँची जगह पर रख दिया और डायरी के आगे घी की ज्योत जलानी शुरू कर दी।

जब फिर महाराज जी आए तो आपने उनसे पूछा, ''क्यों भाई! डायरी रखते हो, जीवन की पड़ताल करते हो?'' एक बूढ़ी माता और एक बुजुर्ग ने कहा कि हमने डायरी को ऊँची जगह पर रखा हुआ है, कभी झूठा हाथ नहीं लगाते; डायरी के आगे घी की ज्योत जलाते हैं और रोजाना धूप देते हैं।

सन्त हमें डायरी को घी की ज्योत जलाने के लिए और धूप देने के लिए नहीं देते। वे हमें डायरी इसलिए देते हैं कि हम अपनी पड़ताल कर सकें कि हमने आज दिन में कितना भजन-अभ्यास किया; किसी की कितनी निन्दा की? जुबान के साथ किसी का बुरा किया या अपने अंदर ही सोचकर बुरा किया? पैसों के साथ किसी का बुरा किया या भला किया? जब हम रात को सोते हैं तो यह सब कुछ डायरी में लिखते हैं तो मन को कुछ धिक्कार पड़ती है और शर्म भी आती है कि मैं इतना कुछ करता हूँ।

पश्चिम के लोग इस डायरी की बहुत कद्र करते हैं। मैं जब बाहर टूर पर जाता हूँ तो देखता हूँ कि वे लोग रात को सोते समय डायरी भरते हैं कि हमने दिन में क्या कुछ किया है? वे उस डायरी में यह भी दर्ज करते हैं कि मैंने कहाँ तक तरक्की की, अंदर क्या देख रहा हूँ; क्या 'शब्द' सुन रहा हूँ?

हम सतसंगियों को अपनी पड़ताल करनी चाहिए। दुनियावी तरक्कियां हमारे साथ नहीं जाएंगी, इनसे सिर्फ अहंकार ही होता है कि हमने इतनी तरक्की कर ली है, हम इतने धनवान हो गए हैं; हमारे इतने बेटे-बेटियां हैं। यह दुनिया का मसाला यहीं रह जाएगा। तरक्की करने वाली चीज भजन-सिमरन ही है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

तोसा बंधो नाम का ऐथे ओथे साथ।

'नाम' की कमाई ने हमें यहाँ भी शान्ति देनी है और मालिक के दरबार में जाकर भी जगह देनी है, हमने उसी के बीच समाना है। मैं एक बार फिर आपको नए साल की शुभकामनाएं देता हूँ।

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से

गुरु का आगमन

पौटर वेली, केलीफोर्निया

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे इस संसार में कोई धर्म, जाति या समुदाय चलाने के लिए नहीं आते। वे हमारे हाथों में डंडे तलवारे नहीं देते कि हम एक-दूसरे के साथ लड़ें। सन्त-महात्मा उन प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाने के लिए आते हैं जो परमात्मा से मिलना चाहती हैं और इस दुनिया के भवसागर से मुक्ति पाना चाहती हैं।

इस दुनिया में अंधा ही अंधे का आगु है। ऐसे लोग कहते हैं कि यह दुनिया बहुत प्यारी है, इसके आगे किसने देखा है? ऐसी बातें केवल बहकाने के लिए होती हैं। इस दुनिया में कोई खुश नहीं। आपको ऐसा कोई आदमी नहीं मिलेगा जो खुश है, अपनी जगह हर कोई दुखी है। जिनके बारे में आप सोचते हैं कि ये लोग बहुत अमीर हैं अपनी जिंदगी में कामयाब हैं वे भी दुखों से भरे हुए हैं, उनके सिर पर दूसरों से ज्यादा चिन्ताओं का बोझ है। सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैं:

बुल्लया साडा ओथे वासा जित्थे बहुते अन्ने।
ना साडी कोई कद्र पछाणे ना सानूं कोई मन्ने।

जब हम इतिहास पढ़ते हैं तो हमें शर्म आती है कि कितने उच्च श्रेणी के महात्मा इस संसार में आए लेकिन हमने उनके साथ क्या किया? जब ईसा मसीह संसार में आए तो सांसारिक लोगों ने उन्हें काँटों का ताज पहनाया। परमात्मा ने ईसा मसीह से पूछा, ''तुम मुझे बताओ कि मैं इन लोगों को क्या सजा दूं?'' आपने कहा, ''हे परमात्मा! इन्हें दिखा दो कि मैं कौन हूँ?''

इसी तरह जब कबीर साहब संसार में आए तो उस समय के बादशाह सिकन्दर लोदी ने कबीर साहब को कठोर शारीरिक दुख दिए

आपको बहुत सी यातनाओं से गुजरना पड़ा। आपके हाथ-पैर जंजीरों से बाँधकर आपको हाथी के आगे फैंका गया, पानी में फैंका गया।

गुरु नानक जी के बारे में कहा गया कि यह लोगों को रास्ते से भटकाते हैं। पाँचवें गुरु, अर्जुनदेव जी और नौंवे गुरु तेगबहादुर जी को बहुत यातनाओं से गुजरना पड़ा। शम्स तबरेज की जीते जी खाल उतार दी गई। मंसूर को फाँसी दे दी गई अगर हमें जरा सी चोट लग जाए तो हमें कितना दुख होता है हम सारी रात सो नहीं पाते तड़पते रहते हैं।

जब ऐसे महान सन्त-महात्मा संसार में आते हैं तो हम उन्हें दुख देते हैं। उनके चले जाने के बाद हम उनके नाम का इस्तेमाल करके लोगों को राह दिखाते हैं लेकिन जब वे संसार में होते हैं तब हम उनकी कद्र नहीं करते और उनकी शिक्षा के अनुसार नहीं चलते।

कबीर साहब कहते हैं, ''जब हमारे माता-पिता जीवित होते हैं हम उनकी कद्र नहीं करते उनके मरने के बाद उनकी आत्मा की शान्ति के लिए बहुत सा धन दान देते हैं जिसका कोई फायदा नहीं क्योंकि वह दान उन तक नहीं पहुँचता, उस दान को कौए और कुत्ते ही खाते हैं।''

प्रेमियों ने अभी जो भजन गाया है वह हिन्दुस्तान में महाराज सावन सिंह जी के भंडारे की याद में लिखा गया था। महाराज सावन सिंह जी के समय में अलग-अलग धर्म के लोग सार्वजनिक रूप से आपके विरोध में बोलते थे। वे लोगों से कहते, ''महाराज सावन सिंह जी के पास न जाएं उनकी आँखों में जादू है। उनके पास एक जादुई किताब है वह आपके कानों में जादू डाल देंगे।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु की ताकत अंदर ही काम करती है लेकिन हमें उसे ताकत नहीं कहना चाहिए क्योंकि परमात्मा सन्त के जरिए ही काम करता है। परमात्मा हम सबमें है फिर भी सबसे अलग है। शारीरिक रूप में सन्त एक समय में एक जगह होते हैं लेकिन 'शब्द' रूप में वे एक समय में हर जगह होते हैं।''

केवल भाग्यशाली जीवों का मिलाप महान गुरुओं से होता है। जिन आत्माओं को परमात्मा ने भक्ति करने के लिए चुना है सन्त उन्हें अपने पास बुलाते हैं या उनके पास जाते हैं क्योंकि सन्तों के लिए दूरी कोई मायने नहीं रखती। सन्तों के पास चुम्बकीय ताकत होती है वे शिष्य को अपनी तरफ इस तरह खींचते हैं जैसे चुम्बक लोहे को अपनी तरफ खींचता है। गुरु जानता है कि किसे अपनी और खींचना है।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हे परमात्मा! मुक्ति केवल सतसंग से ही मिलती है जिस तरह सूखी खेती पानी से हरी-भरी हो जाती है उसी तरह हम सतसंग के जरिए खुशहाल हो जाते हैं।'' सन्त-महात्मा नम्रता से भरे होते हैं उन्होंने अपनी जिंदगी में पूरी खोज की होती है वे सदा अपने अनुभव की ही बात करते हैं।

मुझे हुजूर सावन सिंह जी के प्यारे शिष्यों से मिलने का मौका मिला है। मैं अपने आपको बहुत खुशनसीब समझता हूँ कि मुझे अलग-अलग मौको पर महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठने का मौका मिला। उनके अंदर एक अनोखी नम्रता थी। उन्होंने बहुत कड़ी मेहनत की भजन-अभ्यास किया; कई रातें भजन-अभ्यास में बिताई।

इसी तरह सावन के प्यारे कृपाल ने भी बहुत मेहनत की। आपने भजन-सिमरन के लिए रावी नदी को चुना। एक बार आप रात को भजन-अभ्यास के लिए रावी नदी पर जा रहे थे तो आपको एक पुलिसवाला मिला उसने आपसे पूछा, ''आप कौन हैं कहाँ जा रहे हैं?'' महाराज कृपाल ने कहा, ''मैं भजन-अभ्यास के लिए जा रहा हूँ अगर तुम चाहो तो मेरे साथ आ सकते हो।'' पुलिस वाला ऐसी किस्मत कहाँ से लाए? उसने कहा, ''नहीं परमात्मा की यह कृपा तुम्हारे लिए है।'' कबीर साहब कहते हैं:

सुखिया सब संसार है खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है जागे और रोए।

किसी को हँसते-खेलते हुए परमात्मा नहीं मिलता अगर परमात्मा हँसते-खेलते मिल जाता तो उसके बिछुड़ने पर कौन दुखी होता? परमात्मा को प्राप्त करना अपने रिश्तेदार के घर जाने जैसा नहीं है। यह बातों का नहीं त्याग और खुद को समर्पित करने का रास्ता है।

जो लोग कहते हैं कि उन्होंने बातों से परमात्मा को पा लिया है वे खुद को धोखा दे रहे हैं और दूसरे लोगों को भी गलत राह दिखा रहे हैं। परमात्मा हमारे अंदर है हम जब तक मन, इन्द्रियों से ऊपर नहीं पहुँचेंगे तब तक परमात्मा को नहीं पा सकते।

मैं परमपिता कृपाल और महान सावन का धन्यवाद करता हूँ कि वे पश्चिम में आए और उन्होंने यहाँ प्यार का बीज बोया। आज हम उनकी दया से ही उनकी याद में बैठ रहे हैं और उन्हें याद कर रहे हैं अगर वे यहाँ आकर प्यार का बीज नहीं बोते तो हम यहाँ बैठकर उन्हें याद नहीं कर रहे होते।

जब हमें पता लगता है कि हमारा गुरु इतना ताकतवर है तब हम अहंकार करना छोड़ देते हैं फिर हम यह नहीं कहते कि हम कुछ हैं। तब हमारी आत्मा नम्र हो जाती है और हम एक अपराधी की तरह गुरु के सामने खड़े हो जाते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हे सतगुरु! मैं सबसे बड़ा पापी हूँ आप मुझे मुक्त करें।''

कुछ लोग गुरु अर्जुनदेव जी के पास 'नाम' लेने गए और उन्होंने कहा कि हम बुराईयों से भरे हुए हैं, हममें कोई अच्छाई नहीं है हमने अमृत को छोड़कर जहर को चुना है। हम माया के जाल में फँसे हुए हैं हम बच्चों, पत्नियों और परिवारों से जुड़े हुए हैं। हम परमात्मा की खोज में इधर-उधर घूमें हैं लेकिन अन्त में हमें सच्ची राह का पता चला है। ''हे गुरु! हम आपके चरणों में आए हैं आप हम पर दया करें हमें अपनी भक्ति के लिए स्वीकार करें।''

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

करामात

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

हम परमात्मा सावन-कृपाल का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने दया करके हमारे अंदर अपनी भक्ति का शौक, विरह और तड़प पैदा की। सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे जब संसार में आते है तो दुनिया के बहुत कम लोग ही उनकी तरफ तवज्जो देते हैं कि महात्मा इस संसार में क्यों आए हैं उनका क्या मिशन है और वे क्या बताते हैं? जब वे मालिक के प्यारे इस संसार से चले जाते हैं तो हम उनकी कद्र करते हैं कि वे बहुत अच्छे थे। कहावत है कि जब कोई अच्छा आदमी हमारे पास से चला जाए या संसार छोड़ जाए तो हमें पता लगता है कि उसके क्या फायदे थे और हममें क्या कमियां हैं?

श्रीनगर (कश्मीर) पुंछ जिले में वैरागियों के घर में लक्ष्मणदास पैदा हुआ। लक्ष्मणदास अच्छे घर का था। उसे शिकार खेलने का शौक था, वह शिकार खेलने गया। शिकार में हिरनी को मारा हिरनी के पेट में बच्चा था। लक्ष्मणदास ने हिरनी को तड़पते हुए देखा तो उसके दिल को चोट लगी कि मुझसे बहुत बुरा कर्म हो गया है। वह पश्चाताप करने के लिए किसी महात्मा की शरण लेने पर मजबूर हुआ।

लक्ष्मणदास एक अच्छा आदमी था, उसके दिल में वैराग्य था। एक मामूली सी घटना ने उसके मन को पलट दिया। उसने सब कुछ छोड़कर फकीरी धारण की। आखिर लक्ष्मणदास एक वैरागी साधु की संगत में गया। उसने नांदेड़ (दक्षिण भारत) में अपना डेरा बनाया। वह अपने आपको **करामात** करने वाला फकीर कहलवाने लगा।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''इंसान का बनना मुश्किल है परमात्मा को पाना मुश्किल नहीं, परमात्मा इंसान की तलाश में फिरता है। दिल से दिल को राह होता है।''

सन्त जानते हैं कि किससे क्या काम लेना है। उत्तरी भारत में गुरु गोविंद सिंह जी ने ख्याल किया कि किस तरह दक्षिण भारत में जाकर लक्ष्मणदास का उद्धार करना है, उससे क्या काम लेना है? आखिर आप दक्षिण भारत में लक्ष्मणदास के डेरे में गए।

वैरागी लक्ष्मणदास अपने डेरे में आने वाले हर साधु-फकीर का आदर-सत्कार किया करता था। उसके दिल में घमंड था; वह आम फकीरों का पलंग उल्टाकर उनके साथ मखौल किया करता था। वक्त आने पर जब गुरु गोविंद सिंह जी उसके आश्रम में गए तो उसने उनका पलंग उलटाने में अपनी सारी **करामात** लगा दी लेकिन वह पलंग नहीं उलटा सका। आखिर लक्ष्मणदास ने हाथ जोड़कर अरदास की, ''महाराज जी! मैं आपके आगे हार मानता हूँ आपने मुझसे जो काम लेना है वह बताएं।'' गुरु गोविंद सिंह जी ने पूछा, ''तेरा क्या नाम है?'' लक्ष्मणदास ने कहा, ''अब मैं बिना दाम आपका बन्दा बन गया हूँ। आप मुझसे जो काम लेना चाहें मैं वह करने के लिए तैयार हूँ।''

गुरु गाविंद सिंह जी के शिष्यों में लक्ष्मणदास बहुत मशहूर शिष्य हुआ है। उसने गुरु के दिए हुए 'नाम' पर अमल किया, गुरु का बहुत नाम चमकाया। आमतौर पर हम उसे बन्दा बहादुर कहकर याद करते हैं। जब एक पहलवान दूसरे पहलवान से हाथ मिलाता है तो उसे पता लगता है कि यह मुझसे बहादुर है।

यहाँ सतसंग में बहुत से आदमी बैठे हैं जो मुझे अच्छी तरह जानते हैं उनके जीवन का बहुत सा हिस्सा मेरे साथ बीता है। आमतौर पर सभी मजहबों की किताबें ब्रह्म तक ही बयान करती हैं। हम ब्रह्म को ही दुनिया का रचयिता समझते हैं। हम नहीं जानते कि हमारा असली मालिक कौन है और हमारी आत्मा किसकी अंश है? पहले दो मंडलों तक ब्रह्म की रचना है। यह रचना पाँच तत्वों का बुत बनाती है इसमें जो आत्मा हरकत करती है वह उस दयाल परमात्मा की है इसी के आसरे सारे मंडल कायम हैं।

हम अंदर नहीं जाते; काल हमें गलत रास्ते पर डालता है आखिर इस जीवन के बाद हमें अपना खाज बनाता है। हम उसी काल की भक्ति करते हैं उसे ही पूजते हैं। अवतार ब्रह्म में से आते हैं। सन्त-सतगुरु दयाल के अवतार होते हैं ये चौथे पद - सच्चखंड से अपनी आत्माओं को लेने के लिए ही आते हैं।

बाबा बिशनदास जी ने दया करके मुझे 'दो-शब्द' का भेद दिया। मैंने दिल लगाकर उसकी आराधना की। जिन लोगों ने अपनी आँखों से देखा है वे जानते हैं कि मुझसे आँख मिलाने वाला जमीन पर गिर जाता था और छोटे बच्चे इस तरह अकड़ जाते जैसे उनके अंदर साँस न हो। लोग इसे बहुत बड़ी **करामात** समझते थे और मैं भी समझता था कि इससे बड़ी और क्या करामात हो सकती है?

जब सतगुरु महाराज कृपाल के दिल में दया आई तब परमात्मा कृपाल का एक प्रेमी मुझे बताने आया कि महाराज कृपाल मुझसे मिलना चाहते हैं। मैंने आपका स्वागत किया लेकिन मेरे दिल में यह भी था कि देखें! यह कितने बड़े महाराज है! मेरी आँखों ने बहुत जोर लगाया लेकिन सच्चाई यह है कि मेरी आँखें उनकी आँखों में झाँक ही नहीं सकी। मैंने एक भजन में बताया है:

कई मारे मर गए अखियां दे, कई तारे तर गए अखियां दे।

जब शेर की आँखों में देखें तो पता चलता है कि इस आँख में क्या है? मेरे अंदर भी यह विचार था कि मैं इस तरह करूंगा लेकिन मैं कुछ नहीं कर सका आखिर महाराज जी के आगे सिर झुकाकर कहा, ''आप जो कहेंगे मैं वह करूंगा।''

श्री गंगानगर का एक मशहूर वाक्या है उस समय कई प्रेमी मेरे साथ थे। वहाँ एक योगी इस तरह की **करामात** दिखा रहा था कि वह एक-आधे मिनट के लिए जमीन पर खड़े हुए आदमी को गिरा देता था लेकिन ऐसा करने पर उसकी बुरी हालत हो जाती, वह इस तरह हाथ-पैर मारता था जैसे उसने भांग पी हो। वह नहीं जानता था कि यहाँ

कोई और भी इस तरह की **करामात** करने वाला है। जब उसने मुझसे आँख मिलाई तो मैंने पाँच-सात मिनट उसकी बुरी हालत कर दी। आखिर उसका साथी कहने लगा कि हमारी तौबा है हम तो माँगने खाने वाले हैं। जब दयालु कृपाल आए तो पता लगा कि ये **करामातें** तुच्छ हैं।

सावन सिंह जी बाबा कला की बात सुनाया करते थे कि वह भी इस तरह की **करामात** किया करता था। उसका भाई सतसंगी था। सतगुरु सतसंगियों को हिदायत करते हैं अगर आपके ऊपर परमात्मा दया करता है तो आप अपने में से धुंआ न निकलने दें इसे हजम करें।

एक बुढ़िया की गाय बाहर चरने के लिए गई उसे शेर ने मार दिया। बुढ़िया ने बाबा कला को आकर बताया कि शेर ने मेरी गाय को मार दिया है आप दया करें। बाबा कला ने वहाँ से ही मंत्र पढ़कर फूँक मारी तो शेर मर गया और गाय जिन्दा होकर भागने लगी। जब बाबा कला का अन्त समय आया तो उसे बहुत तकलीफ हुई। उसके सतसंगी भाई ने कहा, ''तू चाहे कितनी ही **करामात** दिखा ले! ये तकलीफ तेरे ही कर्मों का भोग है।'' ऐसी करामाते दिखाने से हमारी अपनी ही कमाई जाती है लेकिन जिनकी रसाई नीचे के मंडलों तक होती है वे मान-बड़ाई में लगे होते हैं उन्हें पता नहीं होता कि हमारा फायदा हो रहा है या नुकसान हो रहा है?

आपके आगे कबीर साहब का शब्द रखा जा रहा है। बहुत सारे प्रेमियों ने कहा अगर कबीर साहब की बानी पर सतसंग हो जाए तो अच्छा है क्योंकि हम सिक्ख कबीर साहब के श्लोको को बहुत प्यार से सुनते हैं लेकिन समझने पर जोर नहीं देते। आमतौर पर इन्हें राग की तरह ही गाते हैं। सोचें समझें कि कबीर साहब क्या कह रहे हैं?

कबीर साहब दुनिया में आने वाले पहले अवतार हैं जो कभी इंसानी जामें से नीचे नहीं गए। आप चारों युगों में आए। आप अपनी बानी में लिखते हैं कि सतयुग में मेरा नाम सतसुकृत, त्रेता में करूणामय, द्वापर में मनिन्द्र और कलयुग में कबीर पड़ा। आपकी बानी पढ़ने से

पता लगता है कि आपने त्रेता युग में लंका में जाकर राजा रावण की पत्नी को 'नाम' दिया। राजा रावण अहंकार में मस्त था इसलिए वह 'नाम' की दौलत से खाली रह गया। आमतौर पर कबीर साहब काशी के आस-पास ही रहे हैं, आपने लम्बी यात्राएं नहीं की।

जो लोग थोड़ा बहुत पढ़-लिख जाते हैं मामूली **करामात** रखने लग जाते हैं उनके दिल में यह ख्याल होता है कि हमसे बड़ा कौन हो सकता है? क्योंकि हमारे छोटे-छोटे ख्याल हैं, मन-बुद्धि सीमित हैं जो बात हमें समझ नहीं आती हम उसे मानने के लिए तैयार नहीं होते। आमतौर पर हम सारी दुनिया को अपने जैसा ही समझते हैं। जब कबीर साहब का काशी में बहुत प्रताप हुआ तो एक पढ़े-लिखे पंडित के दिल में ख्याल आया अगर मैं कबीर को अपना शिष्य बना लूं तो लोग मुझे कबीर का गुरु समझेंगे।

उस पंडित ने कबीर साहब के पास आकर कहा, ''कबीर! तेरा कोई गुरु नहीं है तू मुझे गुरु धारण कर ले मैं तुझे माला दे देता हूँ।'' हिन्दु शास्त्रों में आता है कि माला देने वाले को माला फेरने वाले का चौथा हिस्सा मिलता है। आम लोगों का ख्याल है कि माला फेरने से हमें कुछ न कुछ मिलता है। जिन सन्तों की सुरत अंदर चली गई है वे इस चीज को कोई खास अहमियत नहीं देते। कबीर साहब कहते हैं:

माला फेरुं न हरि भजूं, मुख से कहूं न राम।
मेरा राम मुझे भजे, मैं करुं विश्राम।

मेरा काम माला फेरने का नहीं है। मैं अंदर जाकर परमात्मा के साथ जुड़ गया हूँ। अब राम मुझे याद करे मेरा काम विश्राम करना है। मुझे वह माला मिली हुई है जिसे जपकर आदि-युगादि से ध्रुव, प्रह्लाद और बहुत से भक्त तर चुके हैं। वह माला 'शब्द-नाम' की कमाई है। नशहरा में कमाई वाला जल्लण जाट हुआ है। वह कहता है:

छोटे होंदया ढग्गे चारे, वड्डे होयां हल वाहया।
बुड्ढे होयां माला फड़ ली, रब दा लाम्बा लाहया।

आमतौर पर बूढ़े लोग जवानी में तो अपना समय ऐसे ही बेकार कर देते हैं और बुढ़ापे में कहते हैं कि अब हमने माला ले ली है। मैं बचपन में देखता रहा हूँ कि मेरे पिताजी माला फेरते-फेरते नौकरों को गालियां भी देते रहते थे। एक बार मैंने अपने पिता जी से पूछा, ''परमात्मा आपकी माला की तरफ देखेगा या गालियों की तरफ देखेगा?''

सन्त-महात्मा माला का खंडन नहीं करते। मौहम्मद साहब ने चालीस साल अभ्यास किया। आपने माला का कहीं जिक्र नहीं किया लेकिन उनके जाने के बाद आम लोग वैसे ही चिह्न धारण कर लेते हैं वहाँ कोई न कोई चीज रख लेते हैं।

बचपन से ही मेरे दिल में यह ख्वाहिश थी कि मुझे पूरा गुरु मिले। वे जीव कितने भाग्यशाली थे जिन्हें पूर्ण सन्त-सतगुरु मिले और वह उनके कहे मुताबिक 'नाम' जप सके। शुरू-शुरू में मेरे पास 'दो-शब्द' का भेद था। मेरे दोस्त धर्मचन्द और चन्दन सिंह महाराज सावन सिंह जी के अच्छे नामलेवा प्रेमी थे। हम लोगों ने काफी समय इकट्ठे बिताया है। उनका ख्याल था कि मैं गुरु बनूं और 'नाम' दूं। मैंने उनसे कहा कि मेरे दिल में गुरु बनने की लालसा नहीं है, मैं अधूरा हूँ।

आखिर उनके दिल में ख्याल आया कि यह गंगानगर के लोगों के सामने गुरु नहीं बनना चाहता क्यों न मारवाड़ में जमीन ली जाए! उन्होंने मुझे बहला-फुसलाकर जमीन लेने के लिए मजबूर किया। पाली जिला के मंडी राणी में हमने कई मुरब्बे जमीन खरीदी। उन्होंने फिर से मेरे आगे वही सवाल रखा कि आपको यहाँ गुरु बन जाना चाहिए।

मैंने उनसे कहा, ''देखो प्यारेयो! जो खुद डूबा है वह दूसरों को कैसे तार सकता है?'' सच्चाई किसी का लिहाज नहीं करती चाहे कोई गुस्सा करे। मैंने उन्हें सच बता दिया कि ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं आज भी यही कहता हूँ कि सन्तों ने कोई आर्मी खड़ी नहीं करनी होती। हमने सन्तों के पास अपने सुधार के लिए जाना है। सन्त किसी से चन्दा नहीं लेते वे अपनी कमाई से अपना पेट पालते हैं।

कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु।
आदि जुगादी सगल भगत ताको सुखु बिश्रामु।

'नाम' के बिना जीव बेसहारा है। हम पिछले कर्मों की वजह से दुख-सुख, गरीबी-अमीरी, बिमारी-तंदरूस्ती सब कुछ मजबूर होकर भोग रहे हैं। हम आगे के कर्म करने के लिए स्वतंत्र हैं। चाहे नर्क में जाने का सामान बनाएं या परमात्मा से मिलने का सामान बनाएं! हम सच्चा-सुच्चा और उत्तम जीवन सन्तों के दिए हुए 'पाँच-शब्द' का सिमरन करके सुरत शब्द की कमाई करके ही बिता सकते हैं।

कबीर साहब उस पंडित से कहते हैं, ''देख प्यारेया! मेरी रसना पर परमात्मा का दिया हुआ सिमरन है। आदि-जुगादि से भक्तजन उस सिमरन को करके तरते आए हैं। ध्रुव-प्रह्लाद छोटी सी उम्र में सिमरन करके तर गए। यह काठ की माला किसी काम की नहीं है।'' सन्त-महात्मा जो 'पाँच-शब्द' का सिमरन देते हैं उसके पीछे सन्तों का तप-त्याग काम करता है। महात्मा किताबों से पढ़कर मंत्र नहीं देते वे अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं।

किसी आदमी ने महाराज सावन सिंह जी से कहा कि आप जब 'नाम' दे रहे थे तो फलाने आदमी ने सुन लिया। पता नहीं उस आदमी ने सिमरन कैसे सीख लिया? महाराज जी ने हँसकर कहा अगर कुत्ता कपास के खेत में से निकल जाए तो वह सूट नहीं बनवा सकता, जब झाड़ेगा मालिक के खेत में ही झाड़ेगा। नाम लफ्ज नहीं तवज्जो है अगर लफ्ज होता तो पाँच साल की लड़की भी दे सकती थी फिर बड़े-बड़ो को गुरु के द्वारे पर जाकर सिर न झुकाना पड़ता। कबीर साहब कहते हैं:

राम कृष्ण से को बड़ो तिन्हूं की गुरु कीन्ह।
तीन लोक के नेह का गुरु अग्गे आधीन।

कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु।
बलिहारी इस जाति को जिह जपिओ सिरजनहारु।

सन्त-महात्मा जाति-पाति की परवाह नहीं करते। वे कभी अपनी जाति को नहीं छिपाते। वे सारी दुनिया के अंदर जाहिर कर देते हैं कि हम आपके लिए क्या ख्याल रखते हैं और आपको क्या देने के लिए आए हैं? महात्मा इशारे से ही सब कुछ समझा देते हैं।

कबीर साहब मुसलमानों की जुलाहा जाति में आए थे। जुलाहों के बारे में हिन्दुस्तान में काफी सारी कहानियां प्रचलित हैं कि ये किस तरह के भोले-भाले लोग थे। आप कहते हैं कि सब लोग हमारी जाति के बारे में हँसते हैं लेकिन मैं इस जाति में पैदा होकर बलिहार जाता हूँ कि मैं 'नाम' की कमाई करके प्रभु को प्राप्त कर सका।

एक जुलाहा पठान के घर में नौकर था। पठान गर्मियों में अपने ससुराल चला गया। ससुराल वालों ने अपने दामाद का काफी आदर-सत्कार किया। रात को छत पर छिड़काव करके पतला सा कपड़ा रख दिया। जुलाहा पठान को पंखा करते हुए सोचने लगा अगर मुझे नींद आ गई तो पठान घर से निकाल देगा तनख्वाह नहीं देगा।

आप जानते हैं कि मन खाली नहीं बैठता आखिर दिल में ताना बुनने लगा कि वक्त आए मेरी शादी हो मैं भी अपने ससुराल जाऊं इसी तरह छत पर सोऊं, पानी का छिड़काव करवाऊं, पंखा करवाऊं! अल्लाह ताला करे तो ही मैं ऐसा करूं। ठंडी हवा चली पठान को नींद आ गई। जुलाहा भी एक तरफ सो गया।

वक्त आने पर उस जुलाहे की शादी हुई। जुलाहा पठान के साथ तो मई-जून के महीने गर्मी के दिनों में उसके ससुराल गया था लेकिन यह जुलाहा दिसम्बर के महीने सर्दी के दिनों में अपने ससुराल गया। ससुराल वालों ने अपने दामाद की काफी खातिर की। रात को जुलाहे के सोने के लिए कमरे में चारपाई लगा दी गई लेकिन जुलाहे ने कहा कि आप छत के ऊपर पानी का छिड़काव करके पतला कपड़ा रख दें, मैं छत पर ही सोऊंगा। उन्होंने काफी समझाया लेकिन जुलाहा नहीं माना आखिर उन्होंने पानी का छिड़काव करके पतला कपड़ा भी रख दिया।

साले ने सोचा! मैं इसके पास सोऊंगा तो ठीक रहेगा। जुलाहे ने अपने साले को पंखा करने के लिए कहा। साले को पता था कि पंखे की हवा से मौत ही है उसने कहा कि तू सो जा मैं पंखा करता हूँ।

जुलाहे को सर्दी में नींद कहाँ से आनी थी वह सारी रात सोचता रहा आखिर सर्दी ने सुन्न कर दिया। सर्दी की वजह से उसका शरीर ढोलकी की तरह कसा गया। सुबह जुलाहे की पत्नी छत पर आई कि देखूं! सर्दी में उसकी क्या हालत हुई है? पत्नी ने कहा, ''अल्लाह मारया! तू उठता क्यों नहीं?'' पत्नी ने जब उसे हिलाकर देखा तो वह अल्लाह के पास पहुँच चुका था।

कबीर साहब कहते हैं, ''हमारी जाति में इतने भोले आदमी पैदा हुए थे। मैं इस जाति पर बलिहार जाता हूँ कि इसमें पैदा होकर मैंने प्रभु की भक्ति की।'' परमात्मा किसी खास जाति को रियायत नहीं देता। औरत-मर्द, गरीब-अमीर कोई भी परमात्मा की भक्ति करे परमात्मा को पा सकता है। पलटू साहब कहते हैंः

साहब के दरबार में केवल भक्त प्यार।
केवल भक्त प्यार साहब भक्ति में राजी।

कबीर डगमग किआ करहि कहा डुलावहि जीउ।
सरब सूख को नाइको राम नाम रसु पीउ।।

सीमाप्रान्त का बलूचिस्तानी मस्ताना महाराज सावन सिंह जी का शिष्य था। मस्ताना जी की वजह से एक और बलूचिस्तानी आपका शिष्य बना, वह किसी वजह से बुरी संगत में पड़ गया। किसी ने उससे कहा, ''सावन सिंह ने तुझे क्या दे दिया है? अगर तू ख्वाजा पीर की भक्ति करे तो वह तुझे बहुत धन-पदार्थ देगा।'' उसके कहने के मुताबिक उसने कराची समुद्र के किनारे पानी में खड़े होकर उसके बताए मंत्र को जपना शुरू कर दिया। उसकी टाँगो को जोंको ने खा लिया। धन की खातिर इंसान क्या नहीं करता अपने कीमती उसूल भी त्याग देता है।

ख्वाजा पीर रूपये तो भेजता था लेकिन नजदीक आते ही वह रूपये कोड़ियां बन जाते थे। वह जिस पीर की आराधना कर रहा था उसने कहा, ''देख प्यारेया! तेरे सिर के ऊपर ऐसी ताकत है जिसने सफेद कपड़े पहने हुए हैं। मैं नहीं कह सकता कि वह कोड़ियां क्यों बनाता है, यह तुझे पता होगा कि वह कौन है?'' तब उसे अपना गुरु याद आया। जब कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा तो उसने सोचा कि मैंने कई साल ऐसे ही बर्बाद कर दिए हैं क्यों न मैं अपने गुरु के पास जाऊं!

वह सीमाप्रान्त से चलकर महाराज सावन सिंह जी के दर पर आया। उसने हरे रंग का चोगा पहना हुआ था, वह मुसलमानी वेश में था। हम बहुत से लोग उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे हुए कि यह कौन आदमी है? जब हमने उससे पूछा तो उसने कहा, ''मैं भूल से गलत तरफ चला गया था आखिर मेरे गुरु ने मुझे कराची समुद्र के किनारे जाकर काल की फँासी से निकाला है। मेरा गुरु मुझे यहाँ लाया है; यह इंसानी जामें में आया हुआ खुदा है।''

महाराज सावन सिंह जी छोटे बच्चों को भी 'नाम' दे दिया करते थे। मुझे कई ऐसे प्रेमी मिले हैं जो महाराज सावन सिंह जी को भूल गए थे। उन्होंने जब मेरे पास आकर सतसंग सुना तो महसूस किया कि इस तरह की चीज तो उन्हें बचपन में मिली थी। मैंने उन्हें महाराज सावन सिंह जी का नक्शा बताया तो उन्होंने कहा कि हमें बहुत मामूली सा याद है हमारे माता-पिता महाराज जी के पास जाया करते थे फिर वे भी कमाई करके अच्छे सतसंगी बने।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सन्तों ने जिस घट में 'नाम' डाल दिया है उसे कोई भी जीवित ताकत खत्म नहीं कर सकती। नाम वक्त पाकर उग आता है अगर हम लोग खुशियों में सन्तों के पास नहीं जाते तो कोई न कोई चोट खाकर इस तरफ आ जाते हैं आखिर भटके हुओं को 'नाम' का ही सहारा होता है। 'नाम' एक तरह से अंधे के हाथ में छड़ी होती है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सतगुरु अपने हाथ से जीव की डोरी नहीं छोड़ता ढ़ीली जरूर कर देता है।''

कबीर साहब का एक शिष्य नाम लेकर डाँवाडोल हो गया। कबीर साहब ने उससे कहा, ''प्यारेया! तू जगह-जगह देवी-देवताओं के पीछे क्यों फिर रहा है, तुझे मौत से किसी ने नहीं छुड़वाना। तुझे जो 'नाम' दिया है तू उसका रस पी।''

मैं बताया करता हूँ कि किसी पेड़ की कद्र तभी होती है जब हम उसका फल खाते हैं। सन्तों के 'नाम' की कद्र तभी होती है जब हम मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाकर 'शब्द-नाम' के साथ जुड़ जाते हैं।

कबीर कंचन के कुंडल बने ऊपरि लाल जड़ाउ।
दीसहि बाधे कान जिउ जिन्ह मनि नाही नाउ।

कबीर साहब का एक सेवक हीरे-जवाहरातों के बड़े-बड़े कुंडल पहनकर खूबसूरत बनकर आपके पास गया। कबीर साहब उस सेवक से कहते हैं, ''देख प्यारेया! यह देह सदा सुंदर नहीं रहती बुढ़ापे में इसके ऊपर झुर्रियां पड़ जाती है। घर में आदर कम हो जाता है। जब मौत आती है फिर पता लगता है कि हमने नाम क्यों नहीं जपा।'' आमतौर पर बीबियां-मर्द देह सँवारने में लगे हुए हैं।

कबीर ऐसा एकु आधु जो जीवित मिरतकु होइ।
निर्भय होइ कै गुन रवै जत पेखउ तत सोइ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''हम सभी भक्ति करने का, अच्छा बनने का दम भरते हैं। लाखों-करोड़ो में कोई एक आधा ही है जो जीते जी परमात्मा से मिल गया है; मौत की घाटी से ऊपर चला गया है। चाहे किसी के पास ज्यादा फौजें, हथियार और धन है फिर भी उस बेचारे की जान पर बनी हुई है कि पता नहीं कब मौत ने गर्दन दबोच लेनी है।''

वही डर से रहित है जो यह जानता है कि मैंने यह शरीर छोड़ना है। हर एक ने यह शरीर छोड़ देना है चाहे कोई बीमारी से शरीर छोड़

जाए! चाहे कोई चाकू से गला काट दे! चाहे कोई आत्मघात कर ले! आत्मघात बहुत बड़ा पाप है। कभी भी मरकर किसी का मसला हल नहीं होता कोई सुख प्राप्त नहीं कर सकता। वही निर्भय है जिसने मौत के मसले को हल कर लिया जो मौत से निर्भय हो गया।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''आपको मरकर जहाँ जाना है आप जीते जी भी वहाँ जा सकते हैं। जब हमारी ऐसी हालत हो जाती है तब हमें पशु-पक्षी, अपने-पराए के अंदर भी परमात्मा दिखाई देता है। सच्चाई तो यह है कि फिर हमें कोई भी पराया नजर नहीं आता। हम सारे समाजों को अपनी ही समाज समझते हैं। हर मुल्क के बंदे को अपना ही समझते हैं फिर किसके साथ लड़ना है?''

दूजा होय सो अवरो कहिए।

सबके अंदर परमात्मा है वही सबको पैदा करता है। परमात्मा निर्धन और धनवान में फर्क नहीं समझता। जिसने जीते जी मौत का मसला हल कर लिया है उसकी निगाह इस तरह की बन जाती है कि उसे हर जगह परमात्मा ही दिखाई देता है। जिस तरह अगर हम आँखों पर हरी या काली ऐनक लगा लें तो हम जिस भी चीज की तरफ देखेंगे हमें वैसा ही रंग नजर आएगा।

कबीर जान दिन हौं मुआ पाछे भया आनन्द।
मोहे मिलयो प्रभ आपणा संग ही भजे गोविंद।

आमतौर पर हम हिन्दुस्तानी लोग इस तुक को मामूली समझकर गा लेते हैं कि जब हम मर जाएंगे तो आनन्द होगा वहाँ परमात्मा मिलेगा। प्यारेयो! हम जो कर्म करते हैं मौत के समय यमराज लेने के लिए आएगा भगवान नहीं आएगा। कैदियों को लेने के लिए हिन्दुस्तान का राष्ट्रपति नहीं बल्कि पुलिस वाले आते हैं। उन्हें हुक्म है कि आपने देश का इंतजाम करना है इसी तरह परमात्मा ने भी अपने दूत बनाए हैं। सच्चाई की बाहर नकल है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जीवित को मुआ कहे मुए को रोता, आवत को जाता कहे जाते को आया।

कलयुग का यही न्याय है कि वही जीवित है जो संसार की तरफ से सो जाता है और परमात्मा की तरफ जाग जाता है। जो परमात्मा की तरफ जाग जाता है उसे हम कहते हैं कि यह तो मर गया है। जो परमात्मा की भक्ति छोड़ जाता है संसारी लोगों की तरफ लग जाता है उसके लिए संसारी लोग कहते हैं कि यह हमारी तरफ आ गया है यही हमारा असली रिश्तेदार है।

कबीर साहब कहते हैं, ''मेरे साथी - मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार भी परमात्मा की भक्ति में लग गए हैं। मुझे खुशी हुई जब मैं अपने फैले हुए ख्याल को एकाग्र करके आँखों के पीछे ले आया और अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म, कारण तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच गया। इसी को जीते जी मर जाना कहते हैं। मेरे दिल में उस समय खुशी हुई जब अंदर 'शब्द-नाम' प्रकट हो गया; वहाँ पहुँचकर मन, इन्द्रियां नीचे ही रह जाती हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है जब हम पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं वहाँ औरत-मर्द का लिंग भेद खत्म हो जाता है; वहाँ हमारे मन इन्द्रियों की सूक्ष्म ताकतें नाममात्र ही रह जाती हैं फिर ये ताकतें भी परमात्मा की भक्ति में लग जाती हैं।''

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भली सभु कोइ।
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ।

कबीर साहब कहते हैं, ''हमारे समाजों, घरों में लड़ाई और ईर्ष्या इसलिए है क्योंकि हर आदमी अपने-अपने गुणों का इजहार कर रहा है और दूसरों के ऐब देखने में लगा हुआ है। हमें अपने ऐब और दूसरों के गुण देखने चाहिएं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

हम नहीं चंगे बुरा न कोय, प्रलत नानक तारे सोय।

वही हमारा प्यारा मित्र है जिसने हमारे जैसा जीवन बनाया हो कि सभी हमसे अच्छे हैं। आमतौर पर हम इन बातों को भूल जाते हैं और

एक-दूसरे में नुक्ताचीनी करते हैं। इसी वजह से हमारे घर और मजहबों में खटपटी मची हुई है, सब अशांत है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

दोख पराया देखकर चलत हँसत हँसत।
आपदा कबहूं न देखया जिसका आदि न अंत।

महात्मा कहते हैं कि हम लोगों को देखकर हँसते हैं क्या कभी अपने अंदर झाँककर देखा है कि हम क्या कर रहे हैं? हम सोचते हैं कि हमें कौन देख रहा है? हम अपने आपको समझदार समझते हैं। अपने गिरेबान में झाँककर देखें! हम कितने अच्छे और कितने बुरे हैं।

कबीर आई मुझहि पहि अनिक करे करि भेस।
हम राखे गुर आपने उनि कीनो आदेसु।

मैंने बताया था कि कबीर साहब ने किसी खास विषय पर नहीं बोला जैसा किसी का सवाल था कबीर साहब वैसा ही जवाब दे रहे हैं। किसी ने कबीर साहब से पूछा, ''सारी दुनिया माया के पीछे भाग रही है, आप माया के फंदे से कैसे बचे?'' कबीर साहब कहते है, ''यह सतगुरुओं और 'नाम' की मेहरबानी है।''

एक बार माया और भगवान के अंदर संवाद हुआ। माया ने कहा, ''मेरे भक्त मेरा हुक्म मानते हैं, दिल लगाकर मेरी भक्ति करते हैं।'' भगवान ने कहा, ''मेरे भक्त भी दिल लगाकर मेरी भक्ति करते हैं, मेरे भक्त तेरी भक्ति नहीं कर सकते; वे तुझे अपने घर में घुसने ही नहीं देते।'' माया ने कहा चलो देख लेते हैं!

भगवान ने साधु का रूप धारण किया, किसी साहूकार के घर जाकर कहा, ''मैंने कुछ दिन आपके घर रहकर भजन-भक्ति करनी है।'' उस समय तक साहूकार के ऊपर माया का असर नहीं था उसने कहा कि यह घर-बार आपका ही हैं हमें तो आपके दर्शनों की भूख है। हम तो 'नाम' वाले को ढूंढते फिरते हैं। जब तक आपकी इच्छा हो यहाँ रहकर नाम जपें, आपको खाना तैयार मिलेगा।

भगवान कुछ दिन भजन-अभ्यास करते रहे फिर वहाँ माया आ गई। माया ने माला वगैरहा पहनी हुई थी वह साहूकार से कहने लगी, ''मैंने भी कुछ दिन यहाँ रहकर भजन-अभ्यास करना है।'' माया ने खाना तैयार किया और सारे बर्तन सोने के बना दिए। जब माया सोने के बर्तन छोड़कर जाने लगी तो साहूकार पर उसका असर हुआ उसने सोचा अगर यह औरत कुछ दिन यहाँ रह जाए तो हमें व्यापार करने की जरूरत नहीं, यह बहुत सोना बना सकती है।

साहूकार ने माया से कहा, ''माता! आप कुछ दिन इसी चौबारे में रूककर भजन-अभ्यास करें।'' माया ने कहा कि बस एक ही शर्त है मैंने वह कमरा लेना है जिसमें वह साधु ठहरा हुआ है। साहूकार ने साधू से जाकर कहा कि महाराज जी! आप ऊपर चौबारे में चले जाएं वहाँ अच्छी हवा आएगी। यह त्रिया हठ है। हम उसे भी कुछ नहीं कह सकते क्योंकि हमें तो आप दोनों एक जैसे हैं। अगले दिन माया ने साहूकार को बुलाकर कहा कि मैं यहाँ कैसे रह सकती हूँ यह कैसा भक्त है? मुझे आँखें फाड़-फाड़कर देखता है अगर तुम इसे बाहर निकालो तभी मैं यहाँ रूक सकती हूँ।

आपको पता ही है कि इंसान सच्चाई जानते हुए भी माया के पीछे सब कुछ करता है। साहूकार ने साधु से कहा कि महाराज जी कुंभ का मेला लगा हुआ है पहले आप वहाँ से हो आएं यहाँ फिर कभी आ जाना। भगवान-साधु तो सब कुछ जानते थे, वह घर से निकल गए।

आखिर माया भी वहाँ से चली गई। साहूकार ने देखा कि न वहाँ साधु था और न माया थी। साहूकार पछताया। माया ने भगवान से कहा, ''मैंने किस तरह तुम्हें जलील करके साहूकार के घर से निकलवा दिया।'' भगवान ने कहा, ''यहाँ मैंने तेरी बहुत लिहाज की है। तू काशी जा फिर तुझे पता लगेगा।''

कबीर साहब परमात्मा ही थे। माया औरत का भेष धारण करके काशी गई और कबीर साहब से कहा, ''जुलाहे! तू मेरा ताना बुन दे।''

जब माया वहाँ बैठी तो उसने ताना बुनने वाली सारी नलियों को सोने का बना दिया। कबीर साहब समझ गए कि वही छल फिर आ गया है। कबीर साहब ने माया को समझाया कि मैं बारी आने पर ही ताना बुनता हूँ। जब वह नहीं मानी तो कबीर साहब अंदर जाकर धागा काटने वाला छुरा ले आए और उससे माया के नाक और कान काट दिएः

नाको काटी कानो काटी काट कूटकर डारी।
कहे कबीर सन्तों की बैरन तीन लोक की प्यारी।

जब उसका नाक कान काट डाला तो माया कबीर साहब को नमस्कार करके वहाँ से चली गई। कबीर साहब अपने शिष्यों से कहते हैं, ''मुझे तो माया नमस्कार करके चली गई। मैं अपने गुरु की, नाम की रहमत की कृपा से ही माया से बचा हूँ।''

कबीर सोई मारीऐ जिह मूऐ सुखु होइ।
भलो भलो सभु को कहै बुरो न मानै कोइ।

कोई आदमी बकरों का कत्ल कर रहा था। एक आदमी उसे समझा रहा था कि सबकी आत्मा एक जैसी है। यह तेरे लिए अच्छा नहीं तुझे भी इसी तरह गर्दन कटवानी पड़ेगी। वे फैसला करवाने के लिए कबीर साहब के पास आए तो उस आदमी ने कहा कि भगवान ने ये बकरे क्यों बनाए हैं अगर इनका कत्ल नहीं किया जाएगा तो ये बढ़ जाएंगे। कबीर साहब ने कहा, ''परमात्मा ने तो इंसान भी बनाए हैं अगर कोई तुझसे यह कहे कि तू मेरा खाज है तो क्या तू सुख महसूस करेगा? अगर कोई तेरी आँखों के सामने छुरी लाकर कहे कि मैंने तेरा कत्ल करना है तो तेरा पसीना पानी बन जाएगा।''

आप उसे समझाते हुए कहते हैं, ''तू अहंकार को मार। यह मन तुझसे गलती करवाता है। तेरा जातिय दुश्मन मन तेरे अंदर बैठा है। तू 'शब्द-नाम' की कमाई कर फिर कोई तुझे बुरा नहीं कहेगा सारी दुनिया तुझे अच्छा कहेगी।''

कबीर राती होवंहि कारीआ कारे ऊभे जंत।
लै फाहे उठि धावते सि जानि मारे भगवंत।

किसी ने सवाल किया, ''महाराज जी! इंसान चोर, डाकू या जालिम क्यों बन जाता है?'' आपने कहा, ''देखो प्यारेयो! परमात्मा ने जिसे ख्वार करना है उसमें से अच्छे गुणों को उठा लेता है। जहाँ अच्छी सोच नहीं होगी वहाँ जुल्म और पाप ही होगा। चोर भी इंसान हैं उन्हें भी पता है कि पुलिस पकड़कर हमारा बुरा हाल करेगी लेकिन अक्ल न होने के कारण वे रातों को जागते हैं अगर दिन में मेहनत करें तो इतना कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। सच्चाई तो यह है कि परमात्मा ने उन्हें अपनी तरफ से मार दिया है, भुला दिया है कि तुम जुल्म करो और नर्क में जाओ।''

कबीर चंदन का बिरवा भला बेढ़िओ ढाक पलास।
ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि।
कबीर बांसु बडाई बूडिआ इउ मत डूबहु कोइ।
चंदन कै निकटे बसै बांसु सुगंधु न होइ।

किसी ने कबीर साहब से सवाल किया, ''सन्तों को हर एक क्यों नहीं पहचानता कि आप हमारे लिए परमात्मा हैं। यहाँ के पन्डे लोग आपकी बहुत निन्दा करते हैं।'' कबीर साहब उस सेवक को चंदन की मिसाल देकर कहते हैं, ''चंदन का पेड़ दिखने में छोटा होता है, इसे बावन उंगलियों का बताया गया है। चंदन का पेड़ मैसूर और मद्रास के दक्षिणी भाग में पाया जाता है। इसके आस-पास ढाक-पलास भी खड़े होते हैं वे भी चंदन की तरह खुशबू प्राप्त कर लेते हैं। चंदन की लकड़ी में से बहुत खुशबूदार तेल निकलता है इससे इत्तर बनाए जाते हैं। पंडित चंदन को रगड़कर देवताओं को तिलक भी लगाते हैं।''

फिर उस सेवक ने पूछा, ''महाराज जी! सतसंग में बहुत से लोग आते हैं उन्हें यह खुशबू क्यों नहीं आती?'' आपने साथ ही मिसाल दी

कि उस इलाके में बाँस भी होते हैं। बाँस में पाँच दोष होते हैं। बाँस ऊँचा और लम्बा होता है, इसमें गाँठे पड़ी होती हैं, बीच में से खोखला होता है, बाहर से सख्त होता है। यह पहले निकल आए तो ठीक है बाद वाले को दबा लेता है।

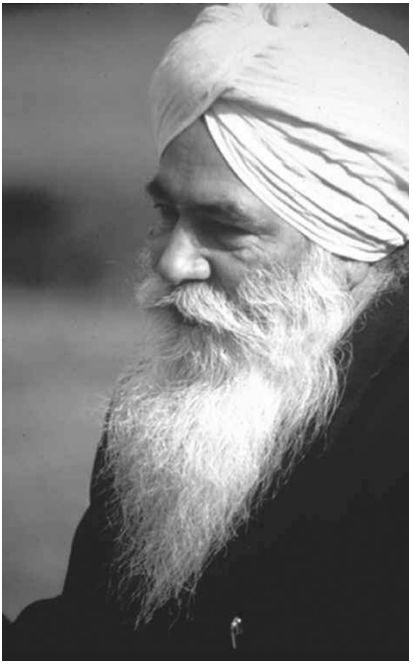

उन आदमियों में यही दोष होते हैं। उन्हें धन का अहंकार होता है। वे महात्मा की नम्रता को नहीं समझ सकते। उनमे विषय-विकार की गाँठ पड़ी होती है। वे कोई ऐब छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। वे जानते हैं अगर महात्मा से 'नाम' लिया तो हमें शराब-कबाब और बुरे कर्म छोड़ने पड़ेंगे। क्या पता परमात्मा हमें माफ ही कर दे! ये उन लोगों के अपने मन के ढ़कोसले होते हैं लेकिन ऐसा नहीं होता।

महात्मा के पास जो औरतें-मर्द रहते हैं उन्हें अहंकार हो जाता है कि हम तो महात्मा के नजदीक रहते हैं हमें अच्छा बनने की क्या जरूरत है? हम हर महीने सतसंग सुनते हैं वे लोग बाँस की तरह ही रह जाते हैं क्या हमने कभी सोचा कि सतसंग सुनने का क्या मतलब है? स्वामी जी महाराज कहते हैं: ***पत्थर पानी लेखा वरता।***

हम सतसंग को एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं। हमारा फर्ज बनता है कि हम जो सुनते हैं उस पर अमल करें अगर एक सतसंग में एक पाप छोड़ें तो आसानी से सारे पाप छूट सकते हैं। हमारा जीवन सुधर सकता है। हमारे घर और पड़ोस वाले भी हमारी नकल कर सकते हैं कि यह कितना बुरा इंसान था अब कितना अच्छा हो गया है वे भी नकल करके फायदा उठा सकते हैं।

आप प्यार से समझाते हैं कि ढाक-पलास भी सुगंधी पाकर चंदन की तरह बन जाते हैं लेकिन बाँस में सुगंध नहीं पड़ती। अहंकारी पुरुष भी यही सोचता है कि मेरे जैसा कोई नहीं है। किसी को पढ़ाई का, किसी को जवानी का तो किसी को धन का अहंकार है; वे बाँस की तरह खाली ही रह जाते हैं।

कबीर दीनु गवाइआ दुनी सिउ दुनी न चाली साथि।
पाइ कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथ।

कबीर साहब कहते हैं, ''हम दुनियावी लोग जाति-पाति में ही रह जाते हैं, कहते हैं कि हमारी जाति ऊँची है यह नीची जाति वाला है अगर हम इसके कहने पर चलें तो हमारी जाति पर फर्क पड़ेगा। जब मौत आती है उस समय कोई भाई-बहन, रिश्तेदार मदद नहीं करता फिर कहते हैं कोई आकर मौत से बचाए लेकिन कौन बचा सकता है?''

कबीर जह जह हउ फिरिओ कउतक ठाओ ठाइ।
इक राम सनेही बाहरा ऊजरु मेरै भांइ।

कबीर साहब ने दुनियावी तौर पर रामानन्द को गुरु धारण किया था। काशी के नजदीक किसी गांव में मेला लगा था। रामानन्द ने अपने कई शिष्यों को मेला देखने के लिए भेजा। वे सब मेले में जाकर मस्त हो गए। रामानन्द ने उन शिष्यों से पूछा, ''तुमने मेले में क्या-क्या देखा?'' उन सबने मेले की रचना बताई। जब कबीर साहब की बारी आई तो रामानन्द ने उनसे पूछा कि तुमने मेले में क्या देखा? कबीर साहब ने कहा, ''मैं आपको क्या बताऊं? मेरा उन कौतुकों में मन नहीं लगा। मुझे तो 'नाम' के बिना सब कुछ उजाड़ ही लगा। आपके पास आकर ही शान्ति मिली है।''

इसलिए मालिक के प्यारों का दिल सिर्फ वहीं लगता है जहाँ सतसंग या 'शब्द-नाम' की कमाई होती है। हमें भी 'शब्द-नाम' की कमाई करके अपने जीवन को पवित्र बनाना है। सन्त-महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि 'शब्द-नाम' की कमाई करनी चाहिए।

✿✿✿

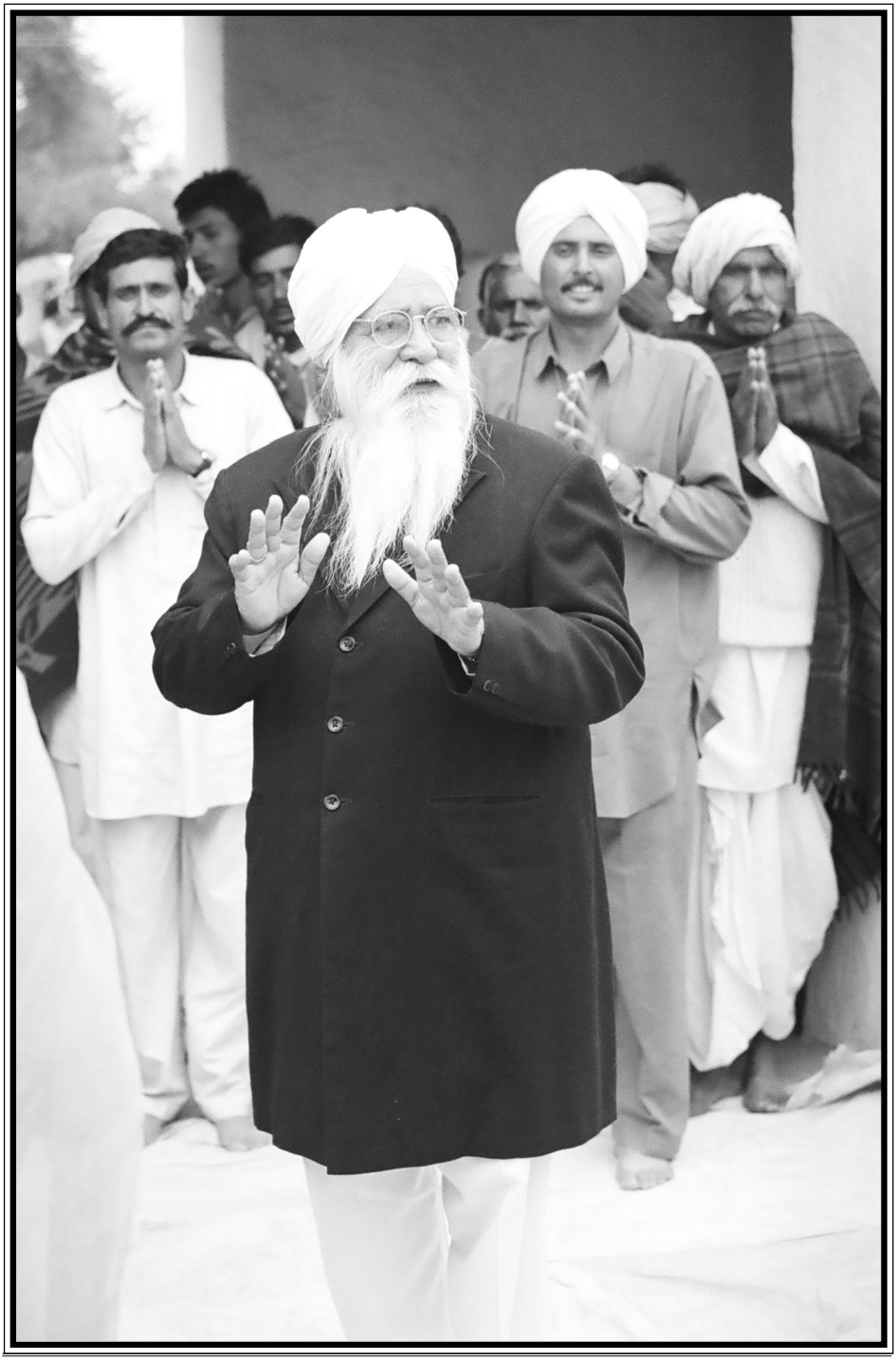

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

बादशाह या कंगाल सारे **प्रेम** के नशे से खाली हैं। जिन्होंने दीवानगी का पेशा अख्तियार कर लिया वे दुनिया में खुश है अगर तुझे दीवानगी के पर मिल जाएं तो तू पक्षी की तरह आसमानों में उड़ जाएगा। **प्रेम** की दीवानगी परमार्थ के सैकड़ों दरवाजे खोल देती है। परमार्थ के रास्ते में **प्रेम** में मस्त हुए लोगों को ही जगह मिलती है; यहाँ होशियारों के कुल्ले उतर जाते हैं अर्थात चतुर लोगों को इज्जत नहीं मिलती उनकी मिट्टी पलीत होती है।

जिन्हें दुनिया बुकरात जालीनूश की तरह अक्लमंद समझती है वे आशिकों की नजर में नाश हो जाने वाले हैं। स्वामी जी फरमाते हैं, ''रूहानी मंजिल के आमिलों के नजदीक बाहरी लक्ष्णों के आलम बिल्कुल अंजान हैं।'' गुरुबानी भी यही बताती है कि चतुराई हमारे बंधन का कारण है यह मालिक को प्राप्त करने में मददगार नहीं।

सह स्याण्पां लख होय एक न चले नाल।

प्रेम इल्मों हजीलतो और किताबों के पन्नों में नही मिलता। जिसे दुनिया ने प्रेम समझ रखा है वह प्रेमियों का रास्ता नहीं। यह इंसान की महदूद अक्ल को तिलांजलि कर देते है, हिरस हवा की हद में कैद नहीं रहते। सच्चे प्रेम में कमालपुर पहुँचने वाले कह उठते हैं, ''हम दीवानगी के हजारों दर्जे लांघ चुके हैं और इंसान की महदूद अक्ल की कीमत से बहुत अच्छी तरह जानकार हैं। तू चाहे अफलातू वाली अक्ल वाला है तू अपने रास्ते पर चल, तेरे साथ हमारा क्या वास्ता?''

जहाँ **प्रेम** की रसाई है वहाँ रूह गुरु की मदद के बिना कैसे पहुँच सकती है? जहाँ जनून या दीवानगी की पहुँच है वहाँ महदूद अक्ल कैसे

पर मार सकती है। प्रेमी के दिल के मुर्ग को जिस्म और जिस्मानियत की हदों के जाल नहीं फँसा सकते क्योंकि वह मुर्ग यहाँ से लांघकर मक्का यानि त्रिलोकी से परे पहुँच चुका होता है। काल या माया उन्हें देखकर हाथ मलते रह जाते हैं; उनका अब कोई चारा नहीं चलता। स्वामी शिवदयाल सिंह जी कहते हैंः

गुरु आदि पुरुष जग आए सब हँस जीव चेताए।
कौओं से दूर रहाय निज प्रेमी खींच बुलाए।
तब काल कर्म मुरझाए माया भी सिर धुन रही पछताए।
गुरु अगम देश अब दीन्हा मैं कहाँ लग वरनू महिमा।

हाफिज साहब फरमाते हैं, ''हे काल! अपना जाल कहीं और बिछा क्योंकि हमारा घर अब बहुत ऊँची जगह पर है। मुर्शिद रब के आशिकों का बादशाह होता है। उसके पास दुनिया के अक्लमंदो को महदूद अक्ल के पंजे से छुड़ाने के लिए रूहानी नशे के मटके भरे हुए हैं। जब कोई जाहरी इल्मों या हिकमतों वाला चाहे अफलातू या लुकमान की तरह दुनिया में मशहूर हो अगर उसके दरबार में हकीकत की तलाश में आए! वह दीदार का एक नशा भरा जल्वा देकर उसे अपनी अक्ल फिक्र के बंधनों से छुड़ाकर नादान जैसा बना देता है। उसकी महदूद अक्ल चकरा जाती है। मुर्शिद उसके सिर पर छाया करके नीच से नीच जाति वाले को रूहानी बादशाह बना देता है।''

इंसानी महदूद अक्ल सब फिक्रों की जड़ है। यह जब आती है तो इंसान सोच-विचार में डूबा रहता है उसका दिल मुर्दा हो जाता है। **प्रेम** करना किसी मुर्दादिल का काम नहीं इसके लिए जिंदादिली चाहिए।

शम्स तबरेज साहब फरमाते हैं, ''इंसान **प्रेम** के अंदर जिंदा होता है कोई मुर्दादिल इस तक नहीं पहुँच सकता। वही जिंदा है जिसने प्रेम के अंदर जन्म लिया है अगर मुर्दा दिलों में भी प्रेम की रूह फूँकी जाए तो वे हमेशा की जिंदगी पा जाते हैं; वे दिल फिर कभी नहीं मरते। प्रेम के लिए महबूब का होना बहुत जरूरी है, उसी पर प्रेम का टिकाव है।''

आशिको के मजहब में तो एक सैकिंड के लिए भी महबूब की दूरी हराम है। दिल को महबूब के साथ लगाने का नाम **प्रेम** है, यह कोई गुड्डियों का खेल नहीं। आशिक वही हो सकता है जो बेलाग हो; दुनिया के बंधनो से आजाद और बेपरवाह हो।

जब **प्रेम** का खमीर उठता है तो वह प्रीतम को छोड़कर और किसी की तरफ नजर उठाकर नहीं देखता। उसका मुर्शिद को छोड़कर और किसी के साथ कोई काम नहीं, उसका दिल दुनिया की डाली डाली पर नहीं फिरता। वह हिरस हवा से खाली होकर अपने मुर्शिद का ही मतवाला हुआ रहता है, उसके साथ उसकी गाँठ बंध जाती है; वहाँ अक्ल और फिक्र के पक्षी पर नहीं मार सकते। **प्रेम** प्रीतम तक पहुँचाने का सबसे जबरदस्त जरिया है; इंसानी महदूद अक्ल इसके सामने दम नहीं मारती। जहाँ प्रेम जोरों में हो वहाँ अक्ल को सहारा नहीं मिलता।

ख्वाजा फरीददीन अतार ने ईश्क के इस महदूद अक्ल का बड़ा अदभुत मुकाबला किया है और इन दोनों का अलग-अलग काम बताया है। आप फरमाते हैं कि ईश्क का काम कतरे का दरिया बन जाना या रूह का मालिक के साथ मिलकर दोनों जहानों से बेखबर हो जाना है।

ईश्क वह है जिसमें रूह मालिक की तरफ जाग उठती है और सब बंधनों से आजाद होकर निर्लेप हो जाती है। यह अपनी खुदी से उठकर मालिक के देश से जुड़कर बैठने का नाम है। इंसानी महदूद अक्ल जाहरी कारणों पर नजर रखती है। ईश्क कहता है कि कारणों के कारक की तरफ नजर रख। इंसानी अक्ल कहती है कि तू लोक-परलोक को तलाश कर। ईश्क कहता है कि सिवाय मालिक के किसी और को न ढूंढ। इंसानी अक्ल हुनरों को पाने और तरक्की की तरफ मजबूर करती है पर ईश्क तो अपने आपसे भी गुजर जाने का उपदेश देता है।

आम अक्ल कहती है कि तू खुशी और सब दर्दों के महरम को ढूंढ पर ईश्क **विरह** और फिराग के दर्दों और गमों को माँगने का हुक्म देता है क्योंकि मालिक ने जहान को **प्रेम** से पैदा किया।

महदूद अक्ल और ईश्क के राह अलग-अलग हैं। अक्ल फैलाव की तरफ ले जाती है ईश्क टिक जाने का जबरदस्त उपदेश देता है। अक्ल कहती है कि चल सैर कर आ और अपने दिमाग में सारी दुनिया के इल्म भर। ईश्क कहता है कि प्रीतम सारे इल्मों का मूल है उसकी गली की परिक्रमा कर केवल उसके ख्याल को अंदर बसा यही काफी है। अक्ल यारों-दोस्तों में मिलकर बैठने को कहती है और ईश्क ऐसे यारों की मौहब्बत जिनमें प्रीतम से अनगहली हो दूर ही रहने का उपदेश देता है।

महदूद अक्ल उकसाती है कि कमाल को पाकर किसी सभा का प्रेजीडेंन्ट या कौम का लीडर बन। ईश्क कहता है कि किसी एकांत जगह खंडो-ब्रह्मांडो में स्वामी की याद में मग्न हो जा। महदूद अक्ल इल्मों और हुनरों को सीखने के लिए प्रेरित करती है। **प्रेम** उस दर पर जाने के लिए कहता है जहाँ से आत्मा को नशा मिले। इंसानी अक्ल महदूद होने के कारण मालिक के दर्शन दीदार होने को असंभव समझती है। ईश्क कहता है कि दोनों आलम उसी का जहूर हैं। खूब दीदार करो।

आम अक्ल कहती है कि कामिल आमिल आजकल कोई नजर नहीं आते पर **प्रेम** कहता है कि अपनी आँखो से खुदी की पट्टी उतारकर देख तेरी नजर में कई कामिल दिखाई देने लग जाएंगे। पूर्ण पुरुषों का नजर न आना हमारी बुरी दृष्टि का ही नुख्स है। महदूद अक्ल कहती है कि दुनिया के माल दौलत से ही सुख मिल सकता है पर ईश्क कहता है कि सच्चा सुख चित की एकाग्रता और लीनता में है इस मुरदार की तरफ मारा-मारा न फिर।

शेष अगले अंक में.....

16 पी.एस.आश्रम में अगले सतसंगो के कार्यक्रम

2, 3, 4, 5 व 6 फरवरी - 2010

5, 6 व 7 मार्च - 2010

31 मार्च, 1 व 2 अप्रैल- 2010